समाज में विधवाओं की स्थिति : एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ0 अनामिका शर्मा

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही स्त्रियों का बहुत ही आदरणीय, सम्मानजनक तथा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विशेषकर हिन्दू समाज में उन्हें प्रारम्भ से ही विवाह, शिक्षा और सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त था। भारतीय धर्मशास्त्रों में उन्हें विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति का प्रतीक कहा गया। उनके बिना पुरुष अपूर्ण और अधूरा समझा गया। शास्त्रकारों का कथन है कि स्त्री, स्नेह तथा सन्तान, ये तीनों मिलकर ही पुरुष पूर्ण होता है। इस प्रकार स्त्री–पुरुष की 'शरीरार्द्ध' तथा 'अर्द्धांगिनी' मानी गयी है तथा 'श्री' और 'लक्ष्मी' के रूप में मनुष्य के जीवन को सुख और समृद्धि से भर देने वाली कही गयी है। किन्तु पति की मृत्यु के पश्चात् वही स्त्री अशुभ, कुलक्षिणी तथा अभिशाप मानी जाने लगती है। भारतीय समाज में विशेषकर हिन्दुओं में विधवा होना अभिशाप या किसी पाप के कर्म के रूप में देखा जाता है। उनके ऊपर विभिन्न प्रकार की पाबन्दियाँ लगायी जाती हैं तथा जिस परिवार की कभी वह रीढ़ होती थी, उसी में उपेक्षित जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाती है।